सं० भ्रो.वि./एफ.डी/91-85/35961.—चूं जि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० सांकम्भरी इन्जिनियरिंग प्रा०लि०, प्लाट नं० 70, सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री राम बिहारी सथा उसके प्रबन्धकों के मध्ये इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई उदयोगिक विवाद है;

म् ग्रीर चृकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायितर्णत हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीत समझते हैं ;

इसलिए, अब, शौदयोगिक विवाद शिशित्यम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रवांत की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए प्रधिसूचना सं. 11495-जी-अम 57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त प्रधिसूचना की धारा 7 के श्रिक्षीन गठित धम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायानिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देते हेतु विनिदिंग्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत श्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

नया श्री राम बिहारी की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं अो.बि./एफ.डी/91-85/35963,—चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मैं० सांकम्भ री इन्जिनियरिंग प्रा० लिं०, प्लाउ नं० 70, सैक्टर-6, फ़रीदाबाट के श्रीमक श्री राम श्रीश्रिष मोर्थ तथा उसके प्रवन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई श्रीदयोगिक विवाद है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को त्यायनिर्णय हुतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते है;

इसिलए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शिवतयों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज्यपाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं० 5415-3 श्रम-68/5254, दिनांक 26 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं० 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायालय, फरीदाबाद को विवादप्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामुला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिण्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादप्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत अथवा सम्बन्धित मामला है: -

नया श्री राम ग्रशिष मोर्थ की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वहं किस राहत का हकदार है ?

सं. ग्रो.बि./एफ.डी./91-85/35975.--चूंकि हरियाणा के राँज्यपाल की राये है कि मै० सांकम्भरी इन्जिनियरिंग प्रा. लि., प्लाट नं. 70, सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रीमक श्री ज्ञान चन्द तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई भौद्योगिक विवाद है;

श्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल विवाद को न्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना वांछनीय समझते हैं ;

इस लिए, ग्रब, ग्रीद्योगिक विवाद ग्रीधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वारा प्रदान की गई शक्तियों का प्रयोग करते हुए हरियाणा के राज:पाल इसके द्वारा सरकारी ग्रीधसूचना सं. 5415-3-श्रम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पड़ते हुए ग्रीधसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त ग्रीधसूचना की धारा 7 के ग्रीधान गठित श्रम न्यायलाय, फरीदाबाद को विवादग्रस्त या उससे सुसंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मानला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु विनिर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रबन्धकों तथा श्रीमक्ष के बीच या तो विवादग्रस्त मामला है या विवाद से सुसंगत ग्रथवा सम्बन्धित मामला है :---

क्या श्री ज्ञान चन्द की सेवाओं का समापन न्यायोचित तथा ठीक है? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है? सं. ओं.वि./एफ.डी./91-8\$/35982---चूंकि हरियाणा के राज्यपाल की राये है कि मै० सांश्रमभरी इन्जिनियरिंग प्रा. लि., प्लाट नं. 70, सैक्टर-6, फरीदाबाद के श्रमिक श्री सिद्धार्थ वे तथा उसके प्रबन्धकों के मध्य इसमें इसके बाद लिखित मामले में कोई ग्रीदयोगिक मामला है;

ग्रीर चूंकि हरियाणा के राज्यपाल शिवाद को त्यायनिर्णय हेतु निर्दिष्ट करना बांछनीय समझते हैं;

इसलिए, अब, औद्योगिक विवाद अधिनियम, 1947 की धारा 10 की उप-धारा (1) के खण्ड (ग) द्वास प्रदान की गई गरिताों का प्रयोग करते हुए हिस्योणा के राज्यनाल इसके द्वारा सरकारी अधिसूचना सं. 5415-3-अम-68/5254, दिनांक 20 जून, 1968 के साथ पढ़ते हुए अधिसूचना सं. 11495-जी-श्रम-57/11245, दिनांक 7 फरवरी, 1958 द्वारा उक्त अधिसूचना की धारा 7 के अधीन गठित श्रम न्यायलाथ फरीदाबाद की विवादग्रस्त या उससे सुमंगत या उससे सम्बन्धित नीचे लिखा मामला न्यायनिर्णय एवं पंचाट तीन मास में देने हेतु निर्दिष्ट करते हैं जो कि उक्त प्रवादनों तथा श्रमिक के बीच या तो विवादग्रस्त सामला है या विवाद से सुमंगत अथवा सम्बन्धित मामला है।

नया भी सिद्धार्थ दे की सेवाओं या समापन न्यायोजित अथवा ठीक हैं? यदि नहीं, तो वह किस राहत का हकदार है?